

प्रयोजन मूलक प्रमाण / उद्देश्य मूलक प्रमाण

Teleological Argument

प्रमाणिका → अनुभव मूलक प्रमाण, परम्परागत मूलक प्रमाण

प्रमाण है → विश्व में विद्यमान व्यवस्था, सामंजस्य, व नियमितता को देखकर ईश्वर के अस्तित्व को अनुमानित करते हैं

प्रमाण कहा जाता है

- Teleology यह Telos से बना है
- Telos का आशय है प्रयोजन
- विश्व में विद्यमान प्रयोजनकर्ता व प्रयोजन के रूप में ईश्वर



समर्थक → पश्चात्य एन्विनारा, मार्टिन्यू, विलियम ब्राउन
प्राच्य न्याय वैधेरीक आदि

प्रमाण माना जाये

- विश्व अपने आप में अचानक उत्पन्न नहीं
- महज संयोग एवं आवश्यकता का परिणाम नहीं
- प्रत्येक स्थान पर व्यवस्था एवं सामंजस्य
- व्यवस्था बिना व्यवस्थापक के नहीं
- विकास का परिणाम नहीं बल्कि असी उत्पन्न सत्ता द्वारा रचित

विशेषता

- कृति से कर्ता का अनुमान लगाया जाता है
- व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर के सत्ता की सीढ़ि
- इस प्रमाण के उत्तर देने का प्रयास की - यह विश्व इतना सुव्यवस्थित

प्रयोजन मूलक प्रमाण ईश्वर की अस्तित्व सिद्धि सम्बंधी एक मानुषाविक प्रमाण है जिसकी जगना परम्परागत प्रमाणों में की जाती है। इन प्रमाणों में व्याप्त विश्व की व्यवस्था सामंजस्यता नियमितता समायोजन आदि के आधार पर इसके व्यवस्थापक या निर्माण कर्ता के रूप में ईश्वर की सत्ता को अनुमानित किया जाता है।

प्रयोजन मूलक शब्द का अंग्रेजी पर्याय है Teleological है जो Telos से बना है जिसका आशय है। प्रयोजन/उद्देश्य चुनके इस प्रमाण में विश्व में विद्यमान प्रयोजन के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है इसलिये इसे प्रयोजन मूलक प्रमाण कहते हैं। पश्चात्य दर्शन में इसके समर्थकों में प्लेटो एम्वेनिश विलियम पैले जेम्स मार्टिनन्यू आदि आते हैं। जबकि भारतीय दर्शन में न्याय-वैशेषिक आदि इस तर्क का समर्थन करते हैं।

प्रयोजन मूलक प्रमाण को मानने का यह आधार है कि यह विश्व अपने आप में स्थापित या अचानक उज्ज्वल धटना नहीं है। क्योंकि इसके भीतर प्रत्येक स्थान पर व्यवस्था सामंजस्य योजना, नियमितता आदि दिखाई देती है। हमारा साधारण अनुभव यह बताता है कि व्यवस्था और प्रयोजन चेतन बुद्धि के बिना नहीं हो सकता जो बड़े मानव निर्मित सांसारिक वस्तुओं एवं व्यवस्थाओं के संदर्भ में सही है। वह विश्व पर भी लागू होला। सांसारिक वस्तुओं और उनमें व्याप्त व्यवस्था की भांति हम वैश्वविक स्तर पर भी व्यापक व्यवस्था एवं सामंजस्य को पाता हैं। उदाहरण स्वरूप तंत्रुओं का क्रामिक परिवर्तन सूर्योदय एवं सूर्यास्त आदि।

जलों की एक विशिष्ट दशा एवं दिशा ओजोन परत की उपस्थिती आदि। इस विश्व में विद्यमान इस व्यापक व्यवस्था एवं प्रयोजन का आधार कोई सीमित बुरी वाला व्यक्ति नहीं हो सकता इसका आधार कोई असीमित या अपरिमित (Infinite) बुरी वाला ही हो सकता है। यही सत्य ईश्वर है। इस रूप में ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध है।

यहाँ हम इस प्रमाण को एक आरेख के माध्यम से देख सकते हैं।

